हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)

हिंदी भवन - लोंग माउंटेन

Website: hindipracharinisabha.com --- Email: hindipracharinisabha@hotmail.com

NEWSLETTER

वर्ष 6 | अंक 15 | मई 2015

-भाषा गई तो संस्कृति गई -

संपादक / टंकन / सज्जा : यन्तुदेव बुधु

सम्पादकीय

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें : भाषा सीखने का आधार !

किसी भी भाषा को सीखने व सिखाने के लिए भाषाविदों द्वारा एक विशेष विधि अपनाई जाती है ताकि बिना किसी कठिनाई से छात्र भाषा को सही तरीके से सीख सकें तथा उस भाषा का मौखिक एवं लिखित रूप का प्रयोग स्वतंत्र रूप से कर सकें। भाषा पर अधिकार पाने के लिए अन्य पुस्तकें पढ़ना भी आवश्यक होता है। पर पाठ्य पुस्तक की रचना किसी विशेष उद्देश्य से ही की जाती है।

पाठ्य पुस्तक भाषा सीखने का एक आधार होता है क्योंकि पाठ्य पुस्तक भाषा तत्वों के आधार पर तथा लेखन विधि के अनुसार तैयार की जाती है। हिंदी की लिपि को लेकर स्वर, मात्रा तथा व्यंजनों के क्रम तथा लिखावट को बच्चों के स्तर तथा कक्षा अनुसार होता है। इस तरह पाठ्य पुस्तकों का निर्माण होता है। यह भी ध्यान रखा जाता है कि कक्षा अनुसार छात्र कितने शब्द ग्रहण कर पाएँगे। पाठों में शब्दावली, शब्द संख्या, नये शब्द तथा शब्द-भण्डार को भी ध्यान में रखना पड़ता है। पाठ में पठन तथा लेखन कार्य पर भी विशेष रूप से बल दिया जाता है।

हिंदी की लिपि एक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है जिसमें जिस तरह से पढ़ा जाता है उसी तरह से लिखा भी जाता है, जबकि अन्य लिपियों में ऐसी बात नहीं। सभा द्वारा निर्धारित प्राथमिक छात्रों के लिए सुगम हिंदी I-VI तक की पुस्तकें इसी आधार पर बनी हैं। छात्रों के समक्ष ऐसी सामग्री रखी गई है जो उनके लिए एकदम सहज सिद्ध होगी। हमारा आग्रह है शिक्षकों से कि आप इन पुस्तकों का प्रयोग कीजिए, इनसे छात्र ज़रूर लाभांवित होंगे। ■

यन्तुदेव बुधु

प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

इस अंक में पढ़िए :

- सभा की त्रैमासिक पत्रिका "पंकज" पृ -2
- भारतीय उच्चायोग से प्राप्त उपकरण पृ -2
- इतिहास के पन्नों से पृ -2
- प्राथमिक कक्षाओं की निर्धारित पुस्तकें पृ -3
- कार्यशाला तथा श्रुतिलेख प्रतियोगिता पृ -4
- सभा के सदस्य सम्मानित पृ -4
- चित्रावली पृ -4

भाषा जिस तरह बोली जाए, उसी तरह लिखी भी जाए तो वह कोई बनावटी भाषा नहीं !

-"आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी"

साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था का मॉरीशस दौरा।

डॉ. पी. के. सिंह हिंदी भवन में संबोधित करते हुए। श्री यंतुदेव बुधु भारतीय विद्वान को सम्मानित करते हुए।

"राम कथा का वैश्विक संदर्भ" विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी में भाग लेने हेतु मुंबई, भारत से चौबीस विद्वतगण 10 जनवरी 2015 को हिंदी भवन पधारे थे। उनमें सभी विद्वान भारत के किसी न किसी संस्था व विद्यालय के प्रोफेसर या तो निदेशक थे। वे पूरे भारत के कोने-कोने से आए थे जिनका नेतृत्व डॉ. श्री प्रवीण कुमार सिंहकर रहे थे। आयोजित एक गोष्ठी के दौरान हिंदी प्रचारिणी सभा में उन विद्वानों का स्वागत किया गया। उन्हें सभा से संबंधित जानकारियाँ दी गईं तथा सभा के कुछ प्रकाशन भेंट में दी गईं। उनकी ओर से भी पुस्तकालय के लिए कुछ पुस्तकें दान में मिलीं। तारीख 11 जनवरी को कात्र-बोर्न के गोल्ड क्रेस्ट होटल में आयोजित संगोष्ठी में महात्मा गांधी संस्थान के प्राध्यापक तथा अन्य कई विद्वान शामिल थे। संगोष्ठी के अध्यक्ष पद पर श्री अजामिल माताबदल थे तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु मुख्य अतिथि रहे। ■

- विशेष सूचना -

छात्रों तथा शिक्षकों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2015 से प्रवेशिका से उत्तमा तृतीय खण्ड तक का पाठ्यक्रम बदल रहा है। सभी कक्षाओं का पाठ्यक्रम अब सभा की वेब साइट पर भी उपलब्ध है। ■

सभा की त्रैमासिक पत्रिका "पंकज" ।

बीस वर्ष से अधिक हो रहे हैं हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा पंकज नाम की एक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित होती है। यह एक साहित्यिक पत्रिका है जिसमें कहानी, कविता, लेख, संस्मरण, सभा के उत्सवों का विवरण तथा छात्रों का एक कोना भी होता है जिसमें माध्यमिक छात्रों के निमित कुछ सामग्री भी होती हैं । इस पत्रिका में स्थानीय तथा विदेशी साहित्यकारों की रचनाएँ भी प्रकाशित होती हैं। इसमें छात्रों की ओर से भी कई रचनाएँ छपती रहती हैं। ■

पत्रिका डाक से प्राप्त करने के लिए आपको एक आदेश पत्र भरना होगा, तथा डाक खर्च के लिए भी एक शुल्क चुकाना पड़ेगा । अधिक जानकारी के लिए सभा से संपर्क कीजिए ।

भारतीय उच्चायोग से सभा को प्राप्त उपकरण

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को और सुदृढ़ करने के लिए हिंदी प्रचारिणी सभा को भारतीय उच्चायोग की ओर से इस वर्ष के फरवरी महीने में पचहत्तर हज़ार रुपये के उपकरण प्राप्त हुए, जिन-में एक प्रोजेक्टर, दो कंप्यूटर, दो प्रिंटर तथा एक फ्लाट स्क्रीन टीवी भी शामिल है। आज के इस संचार के युग में इन उपकरणों से छात्रगण ज़रूर लाभांवित होंगे । हम सभा की ओर से भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुदगल जी को तथा प्रथम सचिव श्री पंकज जिंडल जी को धन्यवाद करते हुए कार्यकारिणी समिति की ओर से भारत सरकार को भी आभार प्रकट करते हैं। पूरे विश्व में हिंदी भाषा के प्रचार में वर्त्तमान भारत सरकार का बड़ा योगदान रहा है। हम हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से हाल में नियुक्त उच्चायोग में द्वितीय सचिव (भाषा और संस्कृति के क्षेत्र में) डॉ. श्रीमती नूतन पाण्डेय को हार्दिक बधाई और शुभकामना प्रकट करते हैं। ■

इतिहास के पन्नों से .....

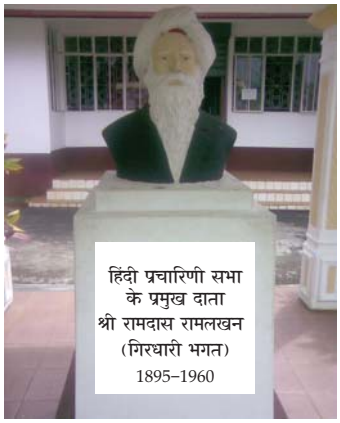
हिंदी प्रचारिणी सभा
के प्रमुख दाता
श्री रामदास रामलखन
(गिरधारी भगत)
1895-1960

हिंदी प्रचारिणी सभा के मुख्य दाता

सभा के मुख्य दाता श्री रामदास रामलखन गिरधारी भगत से ज्यादा जाने जाते थे । उनका जन्म 1895 में देश के उत्तर प्रांत के कोंगोमा गाँव में हुआ था । उनके जन्म स्थान का सही पता था -फूलबाड़ी कस्बा, बेलवेदेर, कोंगोमा । उनके दो भाई थे - गोविंदत्त जो सब से बड़ा था, मंझला गोपाल और ये सबसे छोटे थे रामदास । रामदास सूर्य प्रसाद मंगर भगत के मौसेरे भाई थे । उनका भगत परिवार में काफी आना-जाना था । शायद यही कारण हो सकता है कि उनको हिंदी से इतना लगाव था । रामदास जी पेशे से खेतिहर थे तथा साथ में वे एक साहुकार भी थे । अतः वे पैसों की लेन-देन भी करते थे । वे एक सत्संगी पुरुष थे । रामायण बाँचना उनका शौक था । कोंगोमा के तीन परिवार साथ में सत्संग किया करते थे । वे हैं - हरकू परिवार, सुकर परिवार तथा रामलखन परिवार । कोंगोमा गाँव के श्री परमेश्वर बिहारी (जो अब लोंग माउंटेन के निवासी हैं)भी उनके साथ सत्संग में शामिल होते थे । रामदास जी 11 नवंबर 1928 में सभा के समिति के सदस्य बने थे । समिति में रहकर उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा योगदान दिया। वे चाहते थे कि हिंदी भाषा का उचित प्रचार हो । इसी उद्देश्य से उन्होंने सभा को अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी । अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के बाद वे तीर्थ यात्रा के लिए भारत चले गए और फिर कभी लौटे नहीं । 1960 में वहीं पर उनका स्वर्गवास हुआ । ईश्वर ऐसे महान दाता की आत्मा को शांति प्रदान करे। उनकी याद में आज हिंदी प्रचारिणी सभा भवन के सामने उनकी प्रतिमा स्थित है जो उनके अच्छे कर्मों को याद दिलाता है। हिंदी भाषा को फूलते-फलते देख अगर उस प्रतिमा के ज़रिए बोल पाते तो यही कहते कि मेरा परिश्रम, मेरा त्याग व्यर्थ नहीं गया । हर स्थापना दिवस के अवसर पर हिंदी भवन विद्यालय के छात्रों द्वारा श्रद्धांजलि स्वरूप एक पुष्प माला अर्पित की जाती है। ■